प्रवेशबंदी की तख्ती हटाएँ... सुकून पाएँ

एक कर्मचारी दीपावली की छुट्टियाँ शुरु होते बोला: ''हास! छूट गये, अब तो मौज मस्ती। स्कूल की तरह ऑफिस में भी इक्कीस दिन का वेकेशन होना चाहिए''

उसकी बात सुनकर एक सज्जन ने कहा: ''अपना देश छुट्टी प्रिय है। कोई महान नेता का जन्मदिन आये तो भी छुट्टी और किसी नेता की आकस्मिक मृत्यु हो जाए तो भी छुट्टी। अपनी छुट्टी प्रियता की तुलना में कोई देश है क्या! सुनिये कार्यप्रिय प्रजा कैसी होनी चाहिए, उसका प्रसंग याद आ रहा है...''

- ब्र. कु. गंगाधर

जापान में एक नवनिर्मित अमेरिकन मिल का अमेरिकन मैनेजर सर जेम्स के पास मिल में काम करने वाले कर्मचारी एक दिन उससे मिलने गये और कहा: ''सर, हम काम नहीं कर सकते।'' सर जेम्स ने कहा: ''क्यों?'' जापानी कर्मचारियों ने कहा: ''इसलिए कि आपने हफ्ते में दो दिन छुट्टी रखने का ऐलान किया है!''

अमेरिकन मैनेजर सर जेम्स को जापानी कर्मचारियों के श्रम की भावना का ख्याल न था। इसलिए उसने कहा: ''तो आपको सप्ताह में तीन दिन छुट्टी चाहिए? हमारे अमेरिका में मात्र दो ही दिन छुट्टी होती है।''

कर्मचारियों ने कहा: ''हम सप्ताह में तीन दिन की छुट्टी नहीं चाहते। हमें तो सप्ताह में सिर्फ एक ही दिन की छुट्टी चाहिए। हमारे जापान में कहीं पर भी सप्ताह में दो दिन की छुट्टी नहीं होती।''

''लेकिन दो दिन की छुट्टी रखें तो आपको उससे क्या ऐतराज़ है? इसमें आपका नुकसान क्या है? इससे तो आपको ज़्यादा आराम मिलेगा। आपकी बात सुनकर मुझे आश्चर्य होता है।'' - मैनेजर ने कहा।

कर्मचारियों ने एक स्वर से कहा: ''एक दिन के बदले सप्ताह में यदि दो दिन की छुट्टी रखी जाए तो हम लोग आलसी बन जायेंगे। मनुष्य स्वाभाविक रूप से छुट्टी के दिनों में मौज-मस्ती करते, जिससे उनका बोझ और खर्च बढ़ जाता है। जो हमारी श्रमशक्ति को कम करे, हमारे पर आर्थिक बोझ में इज़ाफा करे, ऐसी छुट्टियाँ हमें नहीं चाहिए। हमें एक दिन की ही छुट्टी चाहिए।''

जापानी लोगों की ऐसी श्रमभावना देख अमेरिकन मैनेजर सर जेम्स स्तब्ध रह गये!

आनेवाले कल में कोई छुट्टीप्रिय कर्मचारी ''आराम हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है'' की मांग करे तो कोई नई बात नहीं!

टेबल पर निकाल करने की राह देखती फाइलें इस बात को प्रमाणित करती हैं कि अभी हमारे यहाँ कर्मचारियों का जापानी कर्मचारियों की तरह 'कर्मन्यायी' बनने का व्रत लेना बाकी है। दीपावली में घर के द्वार पर दीप जलाते हैं, लेकिन दिल में दीप जलाये हैं क्या? दीपोत्सव उत्सव तभी बन सकता है, जब उसके कारण हममें नया कुछ आरंभ हो और बासीपना भस्मीभूत हो। धर्मनिष्ठता(कर्त्तव्य परायणता) और कर्मनिष्ठता के दीपक को बुझने का डर नहीं होता, क्योंकि ये दीप मनुष्य की शुभनिष्ठा में भगवान द्वारा जलाये दीपक हैं। एक शायर ने कहा है...

''फानूस बनके जिसकी, हिफाज़त हवा करे।
वो दीपक कैसे बुझे, जो रोशन खुदा करे।।''

हमारे दिल का दीपक जलाने के लिए स्वयं भगवान को आना है, लेकिन हम प्रवेशबंदी की तख्ती लगाकर बैठ गये हैं, जैसे कुछ नया करना ही नही है! बासी पने को हम नुकसान नहीं, बल्कि मुनाफा मान लेते हैं। दिल में दीपक जगे तो हृदय से कैसी भावनात्मक प्रार्थना प्रस्फुरित होगी!

दिल में दीप जगाने की तरकीब:-

दिल में शुभ निष्ठा बनी रहे उसके लिए...

1. मेरी गति और प्रगति को मैं धवलता की ओर रखूंगा।
2. जीवन में आने वाली किसी भी आपत्ति को मैं सज़ा के तौर पर नहीं मान लूंगा।
3. मुझे ईश्वर ने इस दुनिया में बहुत कुछ दिया है। मैं समर्थ हूँ , और दोगुना करके उसे चुक्तू करूंगा।
4. मैं अपने घर और कर्मक्षेत्र को धर्मक्षेत्र बनाऊंगा, कुरुक्षेत्र नहीं।
5. मेरा परिवार, यह देव मंदिर है। उनमें रहने वाले सब लोग परमात्मा के प्रतिनिधि हैं, ऐसा समझकर कभी उन्हें दु:ख नहीं दूंगा।

रियलाइज़ेशन से रॉयल्टी और रीयल्टी

साक्षी होकरके अपने को देखो। जैसे हम सब यहाँ साक्षी होकर बैठे हैं। बाबा अपनी सकाश दे रहा है। सच्चाई, प्रेम भरी सकाश, चारो ओर लाइट माइट अपना काम कर रही है। हम तो बैठे हैं। हमको सिर्फ लाइट रहना है, लाइट रहने से, अशरीरी बनकर रहने से बहुत अच्छा लगता है। यहाँ ही बैठे रहें ऐसी दिल करती है। शान्तिवन में बैठे साक्षी हो करके देखते हैं तो लगता है कि ऐसा स्थान विश्व में कहीं नहीं है। यहाँ से वायब्रेशन विश्व में जा रहे हैं। वहाँ की आत्मायें आ करके हमको यह अनुभव बता रही हैं। यहाँ ऐसा संगठन का वायुमण्डल है जो सबको कशिश (खैंच) होती है इसलिए जहाँ हमारा मन होगा, वहाँ हमारा तन होगा। मन बिचारा बड़ा अच्छा खुश हो गया, भटकना छोड़ दिया।

अगर वो शिव भोला भगवान है तो उसके बच्चे भी कम नहीं हैं, हम भी भोले हैं। बाबा जो कुछ है आपका है, मेरे पास कुछ नहीं है। सफेद कपड़ा खीसा खाली... फिर भी देखो, बाबा हमको सारे विश्व का मालिक बना रहा है। बाबा की कमाल है या संगमयुग की महिमा बहुत है! ऐसा समय सारे कल्प में चक्र में एक ही बार आता है। अभी कितनी अच्छी-अच्छी बातें बाबा मुरलियों में रोज़ हमें सुनाता है, जिस कारण समय की, स्थान की वैल्यू हो गयी है। ज्ञान भी बहुत बड़ा लम्बा चौड़ा नहीं है, सिम्पल है।

शिवबाबा ब्रह्माबाबा के रथ द्वारा हमको भी अपने जैसा विकर्माजीत, कर्मातीत और अव्यक्त बना रहे हैं इसलिए थोड़ा भी कभी भूल से भी व्यर्थ संकल्प नहीं आ सकता है। अगर आता हो तो अभी-अभी बिचारे को छुट्टी दो। क्या फील करते हो? वाह बाबा वाह! बाबा आपने हमको अपनी इतनी शक्ति दी है, शक्ति बाबा की है पर काम हमारे ऊपर कर रही है। ऐसे फील होता है ना। बाबा को भी यह नशा है अभी जो काम करता हूँ, सारे कल्प में नहीं करता हूँ। बाबा कितना अच्छा काम करता है, हम बच्चे कहते हैं वाह बाबा वाह! बाबा कहते हैं वाह बच्चे वाह! यह सुनते और कहते बाप और बच्चे दोनों खुश हो जाते हैं, चेहरा चमक जाता है।

बाबा ने हमारे लिये फरिश्तों की दुनिया बनाके रखी है, बच्चे तुम वहाँ ही रहो। जब ऐसा कुछ नीचे देखो ना, तो चले जाओ ऊपर। यहाँ नीचे कहाँ रहेंगे क्योंकि अब धरती पर पाँव रखने का समय नहीं है। और ज्ञान में आने से जीवन में बड़ी रॉयल्टी और रीयल्टी आ गयी है, रियलाइज़ेशन से। साक्षी हो करके देखने की जो बाबा ने अभी ट्रेनिंग दी है जैसेकि मैं तुम्हारे साथ हूँ, तो बाबा मेरा साथी है, यह बहुत अच्छा अनुभव है। फिर कहता है साथ भले रहो पर साक्षी हो जाओ। जो आज्ञा मिले जी बाबा, हाँ बाबा कहते और करते चलो, तो इजी राजयोग है, मेहनत नहीं है। बाबा को भी हमारे ऊपर बहुत प्यार है और हमको भी बहुत प्यार है। आपस में साथ रहते भी न्यारे रहो तो एक

दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

दो से प्यार मिलेगा। न्यारे हैं तो प्यारे हैं ना। सभी आपस में ऐसे एक दो को प्यार से देखते प्यार करो, तो सभी के दिल से वाह रे वाह! निकलता है तो अच्छा लगता है क्योंकि ज्ञान जो है वो योगयुक्त बनाता है। धारणा पर ध्यान खिंचवाता है फिर उसमें सेवा समाई पड़ी है। सेवा में ऐसे नहीं बिज़ी हो जाओ, जो पुरुषार्थ में अलबेले वा सुस्त हो जाओ। सेवा भाग्य है। बाबा ने बहुत अच्छा सेवा का चांस दिया है। दुनिया के हर कोने में कैसे बाबा सेवा करा रहा है। सेवा क्या है? हे आत्मा तुम कौन हो, किसकी हो और क्या कर रही हो? बस। सहज है। आधाकल्प तो कुछ भी मेहनत नहीं करेंगे।

सतयुग में सूर्यवंशी सुख से रहेंगे। उसके पहले अभी तो ब्राह्मण हैं, बाबा के बच्चे ब्राह्मण हैं इसलिए हमारी नेचर जो है ना वह ऑर्डीनरी मनुष्यों जैसी नहीं है क्योंकि दिल और दिमाग में है कि वैकुण्ठ में जाने से पहले परमधाम शान्तिधाम में जाना है। यहाँ इतना अच्छा पुरुषार्थ किया, सुखधाम में थोड़ेही यह पुरुषार्थ करेंगे।

आत्मिक स्वरूप में रहने का अभ्यास ही सेफ्टी का साधन

दादी हृदयमोहिनी
अति.मुख्य प्रशासिका

सब मौजों की दुनिया में चले गये! कभी साइलेंस की दुनिया, कभी मौजों की दुनिया, दोनों ही हमारे लिए है। अब एक सेकेण्ड में बाबा कहे एकदम शान्त, तो हो सकते हैं ना! एक सेकेण्ड में बाबा ने कहा ओम् शांति, तो ओम् शांति। फिर कहें रास करो तो रास कर लेंगे! जो बाबा की आज्ञा, वह सेकेण्ड में पालन करने वाले। यही प्रैक्टिस करनी है, क्योंकि अभी समय देखो कैसा नाज़ुक आ रहा है, अभी बाबा कितने समय से अचानक अचानक शब्द बोलता था। अचानक का खेल देख लिया ना! पहले से ही बाबा ने दिखा दिया कि यह तो होना ही है। अव्यक्त बापदादा से फॉरेनर्स पूछते थे बाबा, इंडिया वालों को तो कई सवारियाँ हैं, ये नहीं मिलेगा तो वो मिलेगा वा पैदल भी थोड़ा किया तो पहुँच जायेंगे, लेकिन हम क्या करेंगे? हम तो एरोप्लेन के बिना पहुँच ही नहीं सकते। हमारे पास तो और कोई सवारी नहीं। तो बाबा ने कहा अगर आप योगयुक्त होंगे तो आपका प्लेन चलेगा, पीछे सब होगा। ऐसे योगयुक्त हो जो टचिंग आवे, इतनी एकाग्रचित्त अवस्था चाहिए ताकि उस समय आप परमात्म इशारे को कैच कर सकें। और कोई बात याद नहीं आवे बस, मैं आत्मा हूँ और बाबा मेरे साथ है।

आज भी बाबा ने आत्मा का कितना पाठ पढ़ाया, कैसे, किसको आत्मा को साक्षात्कार कराओ। तो खुद आत्मा रूप में स्थित होंगे तो दूसरों को भी होगा ना। तो चलते-फिरते यह देखो मैं आत्मा हूँ, यह याद है? मैं आत्मा यह काम कर रही हूँ, मैं आत्मा चल रही हूँ, मैं आत्मा... यह आत्मा का ज्ञान जो है ना, वह बिल्कुल पक्का हो। शारीरिक भान बार-बार याद न आ जाए, मैं फलाना हूँ, यह कितना जल्दी याद आता है। हमारे नाम से दूसरे को भी बुलायेंगे तो भी कान जायेगा कि मेरे को बुला रहे हैं, भले दूसरा हो। तो बॉडी-कॉन्शियस कितना पक्का है, ऐसे ही मैं आत्मा हूँ, यह पक्का हो। प्रैक्टिकल आत्मा के रूप में स्थित होने का अभ्यास होगा तभी ऐसे आत्मा दिखाई देगी। दूसरे को भी दिखाई दे कि यह आत्मा ही है, शरीर दिखाई ही नहीं देवे, आत्मा का रूप ही उन्हों को दिखाई दे। ऐसा समय आयेगा, तभी बाबा आत्मा का ज्ञान पक्का करा रहा है। और जब आत्मिक रूप में स्थित होते हैं तभी कार्य अच्छा होता है। आत्मिक रूप में होंगे तब तो सफलता होगी, तो यह अभ्यास चालिए सारे दिन में। बीच-बीच में देखो, आत्मा रूप में स्थित हूँ? भले काम-काज करो, ऐसे थोड़े ही काम नहीं करेंगे। मैं आत्मा यह कार्य कर रही हूँ।

आत्मा का ज्ञान अभी से ही पक्का हो, समझो कोई भी कार्य कर रहो हो तो यह स्मृति आवे कि मैं आत्मा यह कार्य कर रही हूँ, भले हाथ चलें, लेकिन मैं आत्मा हूँ यह स्मृति में आवे। मैं आत्मा इन हाथों से यह कर रही हूँ, इतना आत्मा का ज्ञान पक्का हो। शुरू-शुरू में बाबा ने हमें साक्षात्कार में ऐसे बहुत दृश्य दिखाये कि हम बहनों पर अशुद्ध दृष्टि वालों की बुरी नज़र पड़ी और हम अदृश्य लाइट-लाइट दिखाई दिये, तो वो कैसे भाग गये और हमारी सेफ्टी हुई। तो अभ भी बुरी दृष्टि से देखने वालों को हमारा यह शरीर दिखाई नहीं देवे, इतनी आत्मिक दृष्टि पक्की चाहिए, क्योंकि अभी देखो समय प्रति समय कोई न कोई ऐसी घटनायें हो रही हैं। बहनों पर कैसे-कैसे अत्याचार हो रहे हैं। न्यूज़ में आता रहता है ना कि यह हुआ...वह हुआ? गवर्नमेंट का पब्लिक मानती तो है नहीं इसीलिए बाबा कहते हैं, समय बहुत खराब आयेगा जो संस्कार होंगे वो बाहर आयेगा। तो आजकल के संस्कार हैं ही क्या? इसके लिए बाबा कहते हैं, ऐसे टाइम पर मैं अशरीरी आत्मा हूँ यही दिखाई दे, तो इतना अशरीरीपन का अभ्यास चाहिए, जो उन्हें आत्मा का रूप दिखाई दे, भासना आवे, यह आत्मा बोल रही है, आत्मा दिखाई दे रही है, इतना अभ्यास हमारा पक्का हो। बाबा साक्षात्कार नहीं कहता है लेकिन स्वरूप ऐसा हो जो उनको आत्मा ही दिखाई दे, मस्तक से लाइट दिखाई दे, इतना अभ्यास हो।